TRANSCRIPT OF PRIME MINISTER SHRI CHOUDHARY CHARAN SINGH'S SPEECH DELIVERED AT FARMERS CONFERENCE HELD AT HUBLI ON 4th Nov., 1979

मेरे किसानो, मुझको आज आपके क्षेत्र में आकर और आप लोगों के दर्शन कर बड़ी खुशी हुई। मैं अपने आपको सौभाग्यवान मानता हूँ। मैं अंग्रेजी में बोलूँ तो उसका अनुवाद करना पड़ेगा और हिन्दी में बोलूँ तो उसका भी अनुवाद करना पड़ेगा। इसलिए मैं बजाए विदेशी भाषा के अपनी भाषा में बोलना पसंद करता हूँ।

मैं आज आपको यह बतलाने के लिए आया हूँ कि किसान इस देश का मालिक है। लेकिन किसान अपनी ताकत को भूले हुए बैठा है। हमारे साहित्य में एक दृष्टांत आया है कि एक शेर का बच्चा गलती से भेड़ और बकरियों के झुंड में पड़ गया। एक शेर आया तो भेड़ और बकरियों की तरह उस शेर के बच्चे ने भी भागना शुरू किया। उस शेर इस बच्चे को पकड़ कर एक कुएँ के पास ले गया और यह कहा कि देखो, मैं और तुम एक हैं। तुम भेड़ या बकरी नहीं हो। अपनी ताकत को पहचानो। तुम भी शेर के बच्चे हो। तुम भेड़ और बकरियों की तरह भागना बंद करो। मेरा कहने का अर्थ यह है कि किसान इस देश का मालिक है लेकिन अपने स्वरूप को भूला हुआ है और अपने आपको गीदड़ और भेड़ समझ कर भाग रहा है।

अंग्रेजों के जमाने में कांग्रेस ने एक किसान सभा कायम की थी और जैसे ही देश आजाद हो गया, तो मेरी राय यह थी कि किसान सभा की जरूरत नहीं है, क्योंकि उनको अंग्रेजों से लड़ना था और जिम्मेदारी से लड़ना था, स्वराज्य हासिल हो गया। जिम्मेदारी खत्म हो गई। उसमें किसान सभा की या किसानों के किसी संगठन की आवश्यकता नहीं है। मेरे कहने पर उत्तर प्रदेश की कांग्रेस कमेटी ने किसान सभा को उस समय बन्द कर दिया था।

किसानो, मेरा ख्याल यह था कि देश की जनता का बड़ा भारी अंश किसान है। कोई भी राजनीतिक दल उनकी उपेक्षा नहीं कर सकता। इसलिए यह किसी भी राजनीतिक दल में जाये तो उस दल के मालिक होंगे और हिन्दुस्तान के मालिक अंत में जाकर किसान होंगे। इसलिए किसानों को संगठन की जरूरत नहीं है। वकीलों को संगठन की जरूरत है, दुकानदारों के संगठन की जरूरत है, मजदूरों के संगठन की जरूरत है, क्योंकि वह छोटे–छोटे वर्ग हैं। इसलिए उनको संगठन की जरूरत है और जिनके हाथ में गवर्नमेंट है उस संगठन के जो कर्मचारी हैं, वहां जाकर अपने वर्ग की शिकायतों को रखें। लेकिन अब देश आजाद हो जाने के बाद किसानों की गवर्नमेंट बनाई और दूसरे लोगों के जो संगठन हैं वे उनके सामने अपनी शिकायत पेश करेंगे। वह किसान दूसरे वर्गों की गवर्नमेंट के सामने शिकायत लेकर जायेगा। इसलिए मैंने अपने देशवासियों से कहा कि किसान सभा की जरूरत नहीं है और किसान सभा उन्होंने भंग कर दी। लेकिन पन्द्रह साल के बाद मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि मैंने गलती की। यह बात ठीक है तो किसानों की संख्या सबसे ज्यादा है लेकिन अनऑर्गेनाइज्ड असंगठित और गैरमुनासिब हैं। उसका कोई संगठन नहीं है। इसलिए जितनी ही आपकी गवर्नमेंट ने चाहा कांग्रेस की, दोस्तों की, हमारी गवर्नमेंट चलती रही है।

मैं खुद एक कांग्रेस वाला हूँ, सन् छियासठ तक। सारी उमर मैंने भी कांग्रेस में बिताई है। लेकिन कांग्रेस के लीडरान इलैक्शन के वक्त किसान को याद करते थे। गांव में जाते थे,

किसान और मजदूर की बात करते थे। लेकिन दिल्ली और बंगलौर में जाकर उसी किसान को भूल जाते थे, जिसके बल पर वो आये थे चुनकर। जो बातें होती थीं जैसे किसान के अन्न की पैदावार की कितनी कीमत मुकर्रर की जाये, तो आपके भेजे हुए ये प्रतिनिधि आमतौर पर किसान के खिलाफ राय देते थे, मजदूर को शहर वालों को खुश करने के लिए। तो क्यों? इसका कारण सीदा–सा है कि लीडर उन लोगों के साथ में रहते थे। ईमानदार होते हुए भी देश को उठाने की नीयत रखते हुए भी, उन्होंने देश के लिए बड़ी–बड़ी कुर्बानियां दी थीं, वो देश को मालदार बनाना चाहते थे। लेकिन उन्हें किसानों की समस्याओं का कोई ज्ञान नहीं था। गांधी जी यह कहते थे– ''रियल इंडिया लीव्ज इन विलेजिज''। असली भारत गांव में रहता है तो शहर में पैदा हुए जो लीडरान हैं, जो नेता है, मैं फिर दुहराता हूॅ, कितने ही सिनसियर हों, कितने ही नेकनीयत हों, कितने ही ईमानदार, उनको आपकी मकलीफों का पता नहीं है। आपके मनोविज्ञान का पता नहीं। आपकी कठिनाइयों का पता नहीं। उनको यह नहीं मालूम कि सिंचाई से क्या फायदा होगा। उनको भैंस और गांय में ही फर्क मालूम नहीं, तो बतला देता हूॅ आज आपको। हमारी इंदिरा जो बहन हैं, वो अपना–पराया.....गाय और भैंस? लेकिन अगर उनके सामने न लाया जाये तो गाय और भैंस में फरक नहीं बता सकेंगे। वो यह नहीं बता सकेंगी।.....कितने मुरब्बा गज, कितने वर्ग गज के बराबर होती है। शहर में पले, शहर में रहे, हवाई जहाज से देख लिया या रेलवे में फस्ट क्लास कम्पाटमेंट में सफर करते हुए देख लिया कि दो बैलों को दुम पकड़ कर कोई आदमी गंवार खेत में काम कर रहा है। बस उनका ध्यान वहां तक मौजूद था।

अभी छिहत्तर की बात है, जब मैं और मेरे दोस्त व अन्य साथी जेलखाने में पड़े हुए थे तो इंदिरा जी इलैक्शन की तैयारी कर रही थीं और अपने बेटे संजय गांधी के जरिये यह प्रचार करवा रही थीं लोगों से, दिल्ली के शहरवालों से ''गांव को चलो, गांव को चलो'', ''गांव वालों की सेवा करो'', ''गांव वालों को उनके भले की बात बतलाओ''। नहीं दोस्तो, शहर के लोग आपकी भलाई की बात नहीं बता सकेंगे, लेकिन आप को अपनी तकलीफों का इल्म है या अपनी तकलीफों का, अपने कष्टों का, अपने रोगों का इलाज गांवों से अगर लेकर जायेंगे, तभी जाकर इलाज होगा, वरना होने वाला नहीं। (तालियां)।

मै। अगर गांव वालों की बात करता हूॅ तो इसलिए कि मैं खुद एक किसान के घर पैदा हुआ हूॅ। आपको शायद इन बातों का यकीन नहीं आयेगा। मैं छप्पर छवाये मकान में पैदा हुआ हूॅ, जो छप्पर कच्ची दीवार पर रखा हुआ था। और.....वो खानदान था ही किसानों का और वो अपने जमीन के मालिक नहीं थे, काश्तकार थे। और ऐसे जमींदार जो राजा कहलाते थे, वो जमींदार था। हमारे घर के सामने कच्चा कुआं पड़ा था, जो मुझको आज तक याद है और सिंचाई के लिए भी उसी कुएं से पानी लिया जाता था। खेतों के लिए भी और पीने के लिए भी उसी कुएं से पानी लिया जाता था। तो आदमी के जो संस्कार होते हैं, उसका असर पड़ता है और उसके विचारों पर, शिक्षा का नहीं पड़ता। शिक्षा कोई आदमी कितनी ऊंची हासिल कर ले, उसके जो विचार हैं, उसकी जो भावना है, उसका असर पड़ेगा। इस बात का कि किस घर में पैदा हुआ, क्या पेशा उसके घर होता था, गांव में उसके पड़ोस में क्या होता था, उसके रिश्तेदारों के क्या होता था। तो ये बातें किसानों की जब मैं कहता हूॅ तो आपके साथ या गांव वालों के साथ कोई एहसान नहीं करता। मैं कोई नई बात नहीं कह रहा हूॅ। मैं तो अपनी बात आपके सामने रख रहा हूॅ। इसलिए किसानों की बात कर रहा हूॅ।

और किसी के खिलाफ बात नहीं करना चाहता, मैं आपकी बात करता हूॅ। कोई परोपकार की बात नहीं करता। मेरी आत्मा का तकाजा है, मेरे संस्कारों का तकाजा है कि आपकी और गरीबों की बातों को जानूॅ और ये लीडरान आपकी बातों को जानें।

मेरा बेटा किसान का बेटा नहीं। मैं किसान का बेटा हूॅ। उसे आपकी समस्याओं का कुछ नहीं मालूम। गाजियाबाद में वकालत करता तो मैं वहां रहता। मैं पार्लियामेंट का सेक्रेटरी होता तो चला जाता लखनऊ। अपने स्कूल और कालेज पढ़ने के लिए। फिर इंजीनियरिंग पास करके चाहता था कि मैं उसको नौकरी दिलवाऊं। मैंने उससे कहा था, ''चार सौ रुपये की नौकरी मिलती है। गवर्नमेंट में जगह खाली है तो उसे ले ले। लकिन वो कहता था, ''मुझसे पीछे रहने वाले लोग जिनकी.....तो आज आठ सौ रुपये की नौकरी मिल गई है। उन्हें नौकरी जो मिली है वह सेठों की सिफारिश की मिली है।

तो अब उसने मुझसे कहा कि उसे बाहर पढ़ने के लिए भेज दें। यू0पी0 गवर्नमेंट दस हजार रुपया कर्जा देती थी, उन लड़कों को, जो बाहर तकनीकी ज्ञान के लिए शिक्षा हासिल करना चाहते थे। वो कर्जा लेकर मैंने उसको दिया, वह चला गया, नौकर हो गया। शादी उसने यहां की लड़की से की है। अगर परमात्मा करे या न करे कल को वह प्राइम मिनिस्टर हो जाये तो ठीक वही करेगा, जो जवाहरलाल नेहरू और इंदिरा ने किया है। वो जो मैं कह रहा हूॅ उसके खयालात नहीं ह, क्योंकि वो किसानों की तकलीफों को, आपकी तकलीफों को नहीं जानता। तो किसान या किसानों के बेटे, उनको अपनी ताकत पहचान लेनी चाहिए और तब तक हिन्दुस्तान नहीं उठेगा, जब तक किसानों की हालत अच्छी नहीं होगी। ये बात जब हम कहते हैं, किसानों की हालत सुधारने के लिए, तो मेरे किसान बड़े–बड़े शहरों में रहते हैं उनके जो नेता या जो हमारे.....यही समझते रहे हैं कि मानो हम दुकानदारों के खिलाफ हैं, वो ज्यों के त्यों खिलाफ। नहीं किसानो, मैं आपसे कहना चाहता हूॅ कि जो लोग ऐसा सोचते हैं, गलत सोचते हैं। जो आदमी किसानों के खेतों की पैदावार बढ़ाने की बात करता है, वह दुकनादारों का.....है। आप कहते थे क्यों, इसलिए उनकी दुकान कभी..... .....खेत की पैदावार.....आपकी जरूरत होती तो वो बाजार में ले चलो। मानो इलाके के खेतों की पैदावार दुगुनी या तिगुनी हो जाये। आज कैलिफोर्निया, ब्रिटेन और अमेरिका में दस गुना कपास पैदा होती है बनिस्बत हिन्दुस्तान के। यूरोप में जो मुल्क हैं, उनकी पैदावार चार गुना, पांच गुना होती है बनिस्बत हमारे देश के। तो हमारी खेतों की पैदावार बढ़ सकती है और बढ़नी चाहिए। अगर मानो आपकी पैदावार तिगुनी हो जाये, तो शहर में जितने दुकानदार हैं, आपकी पैदावार खरीदने वालों की तिगुनी तादाद हो जायेगी। फिर आपकी पैदावार को लेकर दूसरे शहरों में, दूसरे जिलों में जायेंगे, दूसरे देश को भेजेंगे, जहां वह चीज पैदा नहीं होती है। तो परिवहन बढ़ जायेगा तो फिर आपकी जेब में रुपया आयेगा, तो आप उसका क्या करेंगे। आपने जरूरत के लिए अन्न रख लिया, चावल रख लिया, गेहॅ रख लिया, ज्वार रख लिया खाने के लिए। फिर बाकी पैसे का क्या करोगे? पैसे तो नहीं खाओगे? उससे आप अपने बच्चों के लिए कपड़े खरीदेंगे, उसके लिए जूता खरीदेंगे और अगर स्कल दो.....खरीदेंगे। बच्चा तकाजा करता है तो आप उसके लिए घड़ी खरीदेंगे। मकान अगर पक्का बनाना चाहते हो तो सीमा टालनी होगी। आपको जरूरत होगी। मान लो कि.....तो उन चीजों को पैदा करने के लिए छोटे–बड़े कारखाने और मशीन अपना–अपना.....तो मशीन को बनाने वाले इंजीनियर होंगे, उनको चलाने वाले इंजीनियर होंगे। बिजली पैदा करने के

लिए इंजीयिर होंगे। पढ़े–लिखे लोग होंगे। पढ़े–लिखे लोगों के पढ़ाने के लिए इंजीनियरिंग पढ़ाने के लिए, साइंस पढ़ाने के लिए स्कूल और कालेज खुल जायेंगे। दुकानदार पैदा हो जायेंगे।

खेती के अलावा तीन बड़े धंधे है– ट्रेड, ट्रांसपोर्ट और इंडस्ट्री। व्यापार, परिवहन और उद्योग–धंधे। जब ये बढ़ेंगे, तब जाकर देश मालदार होगा। अगर आपकी पैदावार परमात्मा करे कम हो जाये.....तो.....या सूखा पड़ जाये तो शहर के दुकानदार हाथ पर हाथ डाल के बैठे रहेंगे। वकीलों का मेहनताना कम होगा, क्योंकि इनकी आमदनी का जरिया है किसान। किसान की आमदनी का जरिया है खंती। तो खेती की पैदावार जितनी बढ़ेगी उतने ही दूसरे धंधे बढ़ेंगे और देश मालदार होगा। किसानो, मैं आपको एक बात बताना चाहता हूँ और यह आपको सुनकर ताज्जुब होगा। तो फिर मैं आपसे कह रहा हूँ कि खेतों की पैदावार बढ़ाओ तब जाकर देश मालदार होगा। दूसरी बात यह कहता हूँ कि आपको अचरज लगेगा और वो यह कि मैं चाहता हूँ कि (शोर न करें। जो लोग शोर मचा रहे हैं मालूम होता है, वे शरीफ घरों में पैदा नहीं हुए। आप खामोशी से मेरी बात सुनें। जो लोग यहां आये हैं, मैं समझता हूँ कि पढ़े–लिखे समझदार लोग हैं। उनको सभा में विघ्न नहीं डालना चाहिए। वरना उनकी सभा को दूसरी पार्टी वाले नहीं चलने देंगे) तो मैं यह कह रहा था उसे ध्यान से सुनो।

जिस देश में किसानों की तादाद ज्यादा है वो देश गरीब हैं। और दूसरे पेशा करने वाले लोगों की तादाद जब ज्यादा होती है तो वो देश मालदार होता है। इसीलिए अमेरिका सबसे मालदार देश है। सौ में से चार आदमी खती करते हैं, चार आदमी। और दियानबे आदमी दूसरा पेशा करते हैं। हमारे देश में जब अंग्रेज आया था, तो सौ में से साठ आदमी खेती करते थे और पच्चीस आदमी उद्योग–धंधे में लगे हुए थे। अब यह है कि सौ में बहत्तर आदमी खेती करते हैं और नौ या दस आदमी उद्योग–धंधे में लगे हुए हैं। तो जब अंग्रेज आया था, हमारा देश मालदार था, अब..... यह देश गरीब है। मैं आप लोगों को सुनाऊं। इतने किसान बैठे हों तो आप यह कोशिश करना कि आपके बेटों में से एक ही बेटा खेती करे। और बाकी लड़कों को उस लायक शिक्षा देना, ऐसी शिक्षा देना और शिक्षा न दे सकें तो..... हिम्मत देना कि खेती छोड़कर दूसरे पेशों में जायें। खेतों पर आश्रित रहने से जमीनों का रकबा बढ़ेगा नहीं, औलाद हमारी बढ़ती जा रही है.....लेकिन हमारी आबादी बढ़ेगी, और..... .....जो पुराने दादा–परदादा के सामने किये थे, उनमें..... बढ़ती जा रही है। इसलिए कोशिश हमको यह करनी है कि, किसानो, आपको यह करना है और मेरी सारी बातों को भूल भी जाओ मगर एक ही बात को गांठ बांधकर जाना कि आपके जितने लड़के हैं, उनमें से एक को ही खेती पर रखना है, दूसरे लड़कों को अन्य पेशों में भेज देना है। अगर वो सरकारी मोटर कार का ड्राईवर भी हो जायेगा, तो तब भी अपने भाई के साथ जमीन बांटकर खेती करने की बजाए वो मालदार होगा। इसलिए दूसरे पेशों में भेज दें। तो देश को मालदार बनाने का यह नुस्खा हुआ की खेत की पैदावार बढ़ानी है। लेकिन खेत में काम करने वाले लोगों की संख्या घटानी है। इसको आप ध्यान से सुन लो। मैं यह कहूँगा, जो लोग शोर मचा रहे हैं वो शरीफों का काम नहीं है और खामोश रहें। मैं फिर दुहरा कर कहूंगा किसानो, इस ..... बनानी है। इस तरह देश को बढ़ाना है, देश के नेताओं को, गवर्नमेंट को इस तरह से काम करना है कि खेत की पैदावार तो बढ़े लेकिन खेत पर काम करने वाले लोगों की तादाद गिर जाये। वो लोग जो शेर मचा रहे हैं क्या वो जरूरी होगा मेरे लिए कि पुलिस के जरिये उनको

कान पकड़ कर निकालवा दूं। मैं जानना चाहता हूँ क्या आप चाहते हैं कि पुलिस आकर आपको निकाल दे। अगर शरीफ आदमी हो, तो बैठो सही तरीके से। अगर जाना चाहें, तो चले जायें निकल कर। मैं तो उसे कह ही रहा था.....

खेत की पैदावार बढ़ाओ। और खेत पर काम करने वाले लोगों की तादाद घटाओ। बात बिल्कुल ठीक है। इसमें कोई अचरज की बात नहीं है। खेत की पैदावार बढ़ाने के लिए चार चीजों की जरूरत होती है। मेहनत करने वाला किसान और बैल, उसके बाद खाद व पानी और बीज के रूप में पूंजी और भूमि व खेती करने की कला, हुनर। आप भूमि महाजन हैं तो तीन चीजें बाकी अन्दर आ सकते हैं। लेकिन खेत पर काम करने वाले लोगों को कब्जे में रहना चाहते हैं, ताकि दूसरे पेशे वाले लोग न हों, तो भी देश मालदार होगा। तो काम करने वाली आपकी तादाद भी खेत पर निर्भर रहना चाहते हैं। और फिर भी खेत की पैदावार बढ़ना चाहते तो दो चीज रह गईं कि पूंजी ज्यादा लगानी है। अच्छी खाद लानी है, अच्छे बैल रखने हैं, अच्छा बीज देना है। अच्छा पानी देना है। इस तरीके से पूंजी लगाना है और खेती करने का हुनर हम में जो लोग ज्यादा अकलमंद हैं। जापान के लोग कई गुना पैदा करते हैं। यूरोप के लोग कई गुना पैदा करते हैं। हमारे देश के अन्दर भी बहुत अच्छे किसान हैं, जो अच्छी खेती करने वाले हैं और दूसरे लोगों से हुनर भी सीखना है। खेत की पैदावार बढ़ा लें। तो जितने आबपासी बढ़ जायेगी, सिंचाई का प्रबंध होगा फिर दुहरा रहा हूँ, जितने अच्छे बीज होंगे, जितनी ज्यादा खाद उसमें डालोगे, पैदावार उतनी ही अच्छी होगी। कैमिकल फर्टिलाइजर कारखानों में बनता है। इसे बेशक डालो लेकिन केवल फर्टिलाइजर ही मत डज्ञलो। उसके साथ गोबर मिलाकर डालना, वरना आपकी जमीन खराब हो जायेगी। आज नहीं, कल नहीं, दस साल के अन्दर, बीस साल के अन्दर खराब हो जायेगी।

मैं तो जो कह रहा था वह बात बीच में रह गई। मैंने किसान सभा को बरखास्त कर दिया यू0पी0 की कांग्रेस कमेटी में। लेकिन पन्द्रह साल के बाद मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि किसानों को संगठन की जरूरत है। क्यो? जितने और लोग हैं छोटे–छोटे वर्ग वाले, वे आपसे बहुत आगे बढ़ रहे हैं और गांव के लोग, आमतार पर किसान, सबसे पीछे रह गये। जब अंग्रेजों के जमाने में हम उनकी खिलाफत करते थे, व्याख्यान देते थे, तो एक बात हमारे कहने की यह थी, तर्क हमारा यह था कि शहर में बड़े–बड़े सेठ बढ़ गये, मालदार आदमी बहुत बढ़ गये और गांव के लोग जो हैं वो कमजोर हो गये और गरीब हो गये। उन दोनों की आमदनी का फर्क बढ़ गया। सुराज होगा और उस सबको कम करेंगे, लेकिन किसानो, आपको सुनकर अचरज होगा कि उल्टी बात हो गई। सन् पचाय–इक्यावन में अगर किसान की आमदनी सौ रुपये थी, तो ये शहर के रहने वाले गैर किसान हैं उनकी आदमनी पौने दो सौ रुपये थी। सौ.....और छिहत्तर–सतहत्तर में क्या हुआ? छब्बीस साल के स्वराज्य के बाद क्या किसान की आमदनी अगर सौ.....आम किसान की आमदनी साढ़े तीन सौ, पौने दो सौ थी, जब अंग्रेज गये। तीस साल के स्वराज्य के बाद सौ और साढ़े तीन सौ क्यों? रेलवे के लोग हड़ताल करते हैं, गवर्नमंट झुकती है। जो लोग जहाजों को लादते हैं या उससे सामान उतारते हैं, हड़ताल करते हैं। गवर्नमेंट झुकती है। जो लोग बिजली में काम करते हैं, वे हड़ताल करते हैं तो सरकार झुकती है। जो लोग बैंकों में काम कर रहे हैं, वे क्लर्क साढ़े सत्रह सौ रुपये पाते हैं। और तीन बजे क्लर्क रजिस्टर उठाकर रख देता है। आज का मेरा काम खत्म हो गया। अगर दो घंटे और काम करते हैं तो बाईस रुपये फी घंटा ओवर टाइम

मिलता है। काम करो या काम कराओ, जितना एक आदमी को करना चाहिए। वह क्लर्क मान लो तीन बजे काम पूरा कर देता और कहता है कि दो घंटे काम करने के लिए मेरी ड्यूटी नहीं है। अगर उससे दो घंटे और काम लिया जाता है तो 22 रुपये फी घंटा और पैसे लेगा। और गवर्नमेंट देती है। सत्रह सौ तनख्वाह की जगह चार–चार हजार रुपये क्लर्क पा रहे हैं। ये हमारा हवाई जहाजों का मेला है, उसके पास जो मोटर कुछ रहती है उसके ड्राईवर को साढ़े तेरह सौ चौदह सौ रुपये महीने मिलता है। विचार करो। साढ़े तेरह सौ रुपये महीना। ये जो हवाई जहाज में जो लड़कियॉ रहती हैं, चाय–वाय देने के लिए, उन्हें तनख्वाह सात सौ रुपये मिलती है और पन्द्रह सौ रुपये महंगाई भत्ता पाती हैं। कुल बाईस रुपये पाती हैं। फिर भी स्ट्राइक होती है और गवर्नमेंट झुकती चली जाती है।

किसानो, तुम हड़ताल नहीं कर सकते। और न मैं चाहता हूॅ कि तुम हड़ताल करो। लेकिन तुम अपना संगठन बनाओ। दुनिया में आज कोई किसी को संगठन के बिना पूछता नहीं है, चाहे उनकी मांग कितनी ही वाजिब क्यों न हो। एक संस्कृत का श्लोक भी है कि कलियुग आया हुआ है और इसमें जिसका संगठन मजबूत होगा, उसी की बात चलेगी और दूसरे की चलने वाली नहीं। तो ये किसान सम्मेलन हमने बनाया है। इसमें कोई राजनीति नहीं है। जो भी किसान किसी भी राजनीतिक पक्ष से वास्ता रखते हैं, सभी इसके मेम्बर हो सकते हैं। जिस तरह आप लोगों ने मुझे मेमोरण्डम दिया है, अभी आवेदन पत्र दिया है और मेरे एक साथी से आप आग्रह कर रहे थे कि वो उन्हें पढ़ाये और पढ़कर सुनाये, क्योंकि काम होने में देर लग जाती है। लेकिन जो आवेदन पत्र मुझको दिया गया है, उसमें जो पहली बात कही गई है, मैंने उसको पढ़ा नहीं है। लेकिन मैं आपको सुनाये देता हूॅ कि पहली बात को मैंने स्वीकार कर दिया है, मैं आज ही घोषणा कर देता हूॅ।

पहली बात यह है कि किसानों को कर्जा देने के लिए एक अलग बैंक होना चाहिए। अपने जितने बैंक हैं, गवर्नमेंट की तरफ से वो और लोगों को कर्जा देते हैं। कायदे–कानून के मुताबिक उनको किसानों को भी कर्जा देना चाहिए। लेकिन किसान चक्कर काटते रहते हैं। मान लो लोगों को बैंकों से दस करोड़ रुपया नौ फीसदी ब्याज पर कर्जा मिलता है, तो एक करोड़ रुपया किसानों को भी कर्जा मिलना चाहिए। जब खेती करने वालों की तादाद बहत्तर फीसदी है। बहत्तर फीसदी लोग जिस पेशे में लगे हुए हं,ै तो उस पेशे के विकास के लिए एक करोड़ रुपया और बाकी अट्ठाईस फीसदी लोगों के लिए नौ करोड़ रुपया। ..... इसमें किसी गवर्नमेंट का कसूर नहीं है। हम जाकर वहां आपको भूल जाते हैं और जिनकी आत्मा वहां.....। एम0 पी0 को भेज दीजिए, एम0एल0ए0 को भेज दीजिए और शहर के बड़े आदमी को लीडर बना दीजिए, आपका एम0पी0 और एम0एल0ए0 वहां जाकर कुछ भी नहीं करेगा, उन्हीं के साथ हाथ उठायेगा। तो इसलिए बहुत दिनों से यह प्रश्न चल रहा था। आपके सेवक हैं या लीडर हैं श्री टी0ए0 पै, उन्होंने भी हमसे बहुत दिन पहले कहा था, जैसे ही मैं वित्त मंत्री हुआ तो मैंने एक की मुकर्रर कर दी कि इस बात को तय करने के लिए कि किसानों के लिए अलग बैंक की जरूरत है या नहीं। हमारे जो सेक्रेटरी थे वो यह कह रहे थे कि चौधरी साहब, इसकी जरूरत नहीं। जिन बैंकों से सबको पैसे मिलते हैं, उनसे किसान भी ले सकता है। लेकिन मैंने कहा कि नहीं। इसका अध्ययन करो। तब मैं.....परसों मैंने एक आफीसर को बुलाया था, जो आपका चीफ सेक्रेटरी रह चुका है, जी0वी0के0 राव, बहुत काबिल आफीसर हैं। मैं उसको बहुत प्यार करता हूॅ, उसकी काबिलीयत की वजह से। वो जो कमेटी

हमने तय की थी इस प्रश्न को तय करने के लिए कि किसानों के लिए कर्जा देने के लिए अलग बैंक बने या न बने, वो उस कमेटी का मेम्बर है। अभी परसों मैंने बुलाया, उनको और एक काम के लिए..... मैंने पूछा कि क्या हो रहा है उस कमेटी में? उन्होंने कहा कि बहुत आग्रह और तर्कों के बाद मैंने दूसरे साथियों को राजी कर लिया है। अब हम सर्वसम्मत हो गये हैं कि किसानों के लिए अलग बैंक बनना चाहिए। तो आपके जो आवेदन–पत्र हैं, इनमें बैंक की ही बात लिखी गई है। मैं आपको कह देता हूँ कि बैंक की आपकी इस मांग को मान लिया और दस दिन के अन्दर हुक्म हो जायेगा, जिससे कि एक अलग बैंक किसानों को रुपया कर्जा देगा।

अब समस्याएं अनेक हैं, उन समस्याओं का हल एकदम नहीं कर सकते। मुझको अभी बैंगलौर जाना है, वहां से रात को देहली जाना है, दो दिन के बाद फिर मुझको महाराष्ट्र का दौरा करना है। लेकिन यह कहना चाहता हूँ कि किसानो, आपके गांवों में सड़को की कमी, स्कूलों की कमी, अस्पतालों की कमी, बिजली की कमी, हर तरह की कमी है। भ्रष्टाचार तो तब तक मिटेगा नहीं जब तक कि गांव के रहने वाले लड़के दिल्ली और कर्नाटक में जाकर राजसत्ता छीन नहीं लेंगे। बिना इसके चलने वाला नहीं।

यारो, मैं अपने कथन को समाप्त करना चाहता हूँ। एक बात कहकर खत्म किये देता हूँ, वह यह कि उठो और जागो। अपनी ताकत को पहचानो। तुमें बहुत दिन हो गये सोते हुए। यह हिन्दुस्तान तुम्हारा है। केवल शहरों का और पूंजीपतियों का ही नहीं है। इन शब्दों के साथ मुझे जाने की इजाजत दो और मेरे साथ तीन–चार नारे लगा दो। तुम लोगों को नारे लगाने नहीं आते। मैं इनसे कह रहा हूं, शायद नारे भी सिखा नहीं सकते हैं इन्हें। अब मैं बोलूंगा 'भारत माता', आप बोलना 'जिन्दाबाद'। महात्म गांधी, जिन्दाबाद। किसान सम्मेलन जिन्दाबाद। किसान सम्मेलन जिन्दाबाद। किसान सम्मेलन जिन्दाबाद।

————————0————————